

माता पिता की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी भक्ति है- वंदना श्री



दैनिक प्रजादूत

देवास। कैलादेवी मंदिर पर नवरात्रि के सप्तम दिवस कथा उपरांत बृजरत्न वंदना श्री ने भक्त श्रीमान की कथा का सुंदर वर्णन करते हुए भक्त नाभा जी द्वारा लिखी गई 108 भक्तों की कथा का वृत्तांत सुनाते हुए वर्तमान समय में हमारी संस्कृति के पतन पर चिंतनीय घटनाओं का वर्णन करते हुए कहा कि भक्त नाभाजी ने उन भक्तों की गाथा लिखी है जिन्होंने ईश्वर की भक्ति के साथ माता पिता की सेवा को सर्वोपरि माना है। नाभाजी जन्म से दृष्टिहीन थे घोर अकाल के समय उनका जन्म हुआ। 5 वर्ष की आयु में माता पिता का देहात हो गया। संत श्री बालकदास जी ने उन्हें अपने आश्रम में रखा और भक्ति तत्व का

ज्ञान देते हुए भक्तों की कथा सुनाते। नाभा जी ने किशोरावस्था में भक्त श्रीमान ग्रंथ की रचना की। जिसमें कलयुग के सच्चे भगवान हनुमानजी की कथा, रामचरित मानस के रचनाकार तुलसीदास जी, आदिगुरु शंकराचार्य, भक्त रामदासजी की गाथा, भक्त नामदेव, भक्त पुंडरिक की कथा का वर्णन करते हुए कहा कि भक्त पुंडरिक ने माता पिता की सेवा को ही ईश्वर की भक्ति माना। जिनकी भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं नारायण को उनके घर आना पड़ा उस दौरान पुंडरिक अपने माता पिता की सेवा कर रहे थे। उन्होंने भगवान से कह दिया कि अभी बाहर ही खड़े रहो, घर में से उन्हें एक ईंट लाकर दी जिस पर

भगवान को खड़े रहने के लिये मजबूर कर दिया। भगवान विष्णु आज भी पुंडरीनाथ के रूप में एक ईंट पर खड़े हैं। यह माता पिता की सच्ची सेवा का प्रताप है कि ईश्वर उस भक्त के अधीन हो जाते हैं जो माता पिता की सेवा करता है। वंदना श्री ने इस कथा के उद्देश्य को प्रकट करते हुए कहा कि आज के दौर में माता पिता का दर्जा घटता चला जा रहा है। मोबाईल के इस युग में बच्चों के संस्कारों का पतन हो रहा है, यह हमारी संस्कृति और राष्ट्र का पतन है। बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल करना है तो प्रत्येक माता पिता को रात्रि में सोने के पूर्व किसी एक भक्त की कहानी या महापुरुषों की कहानी सुनाना चाहिये। यह ज्ञान उसकी चेतना और बुद्धि का विकास करेगी। हम बच्चे का भविष्य संवारने की कोशिश करते हैं तो इस कोशिश में अगर इस संस्कृति को अपनाएंगे तो बच्चा अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएगा। आज जब भी कोई छोटी घटना होती है तो बच्चा मां को याद करता है, और बड़ी घटना होती है तो पिता को याद करता है।